वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 1 | रविवार 30 अप्रैल 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

राजस्थान में 24 घंटे में 280 नए संक्रमित

बाड़मेर-नागौर में 2 संक्रमित मरीजों की मौत, जयपुर में सबसे ज्यादा 678 एक्टिव केस

जयपुर. कासं। राजस्थान में कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। शनिवार को राजस्थान में 280 नए संक्रमित मरीज सामने आए हैं। इनमें सबसे ज्यादा 48 संक्रमित मरीज राजधानी जयपुर में मिले है। वहीं नागौर और बाड़मेर में 1-1 संक्रमित मरीज की कोरोना की चपेट में आने के बाद मौत हो गई है। हेल्थ डिपार्टमेंट ने शनिवार को 6560 मरीजों के सैंपल की जांच की थी। इनमें जयपुर में 48, अजमेर में 32, नागौर में 28, उदयपुर में 25, बीकानेर में 25, जोधपुर में 19, बांसवाड़ा में 18, भरतपुर में 14, पाली में 12, धौलपुर में 12 संक्रमित मरीज मिले हैं। जबकि बीते 24 घंटों में 471 मरीज कोरोना से रिकवर हो चुके हैं। जिसके बाद राजस्थान में सबसे ज्यादा 678 संक्रमित मरीज राजधानी जयपुर में है। वहीं भरतपुर में 239, उदयपुर में 261, अजमेर में 201, जोधपुर में 195, नागौर में 160, बीकानेर में 155, चित्तौड़गढ़ में 126 और अलवर में 114 संक्रमित मरीज मौजूद है। राजस्थान में कोविड के बढ़ते केसों को देखते हुए हेल्थ डिपार्टमेंट ने सभी सीएमएचओ को टेस्टिंग बढ़ाने के निर्देश दिए है। इसके साथ ही डॉक्टर्स को निर्देश दिए है कि जिन मरीजों में कोविड के लक्षण दिखे उनकी जांच जरूर करवाने के लिए कहा था। इसके बाद प्रदेश में लगातार टेस्टिंग की संख्या में बढ़ोतरी हुई थी। वहीं शनिवार को 6560 टेस्ट ही हुए।

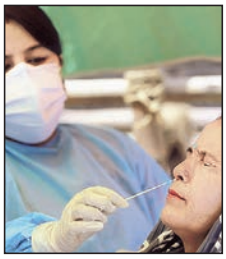

पायलट बोले-मेरे सुझावों पर अमल हो

अचानक विधानसभा अध्यक्ष से मिले, रंधावा भी जोशी से मिलने पहुंचे

जयपुर. कासं

पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट शनिवार को अचानक स्पीकर सीपी जोशी के बंगले पर पहुंचे। पायलट ने जोशी से लंबी चर्चा की। पायलट के बाद जोशी से प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा ने भी मुलाकात की। स्पीकर से मुलाकात के बाद पायलट ने नेताओं को धरातल पर उतरकर पार्टी के लिए काम करने और खुद के सुझावों पर अमल करने को कहा। पायलट ने कहा कि एआईसीसी के प्रतिनिधि और संगठन के कार्यकर्ता धरातल पर जाएं। कार्यकर्ताओं की भावना समझें। मैंने खुद भी एआईसीसी में सुझाव दिए हैं। मुझे लगता है उस पर अमल करना चाहिए। सह प्रभारियों की नियुक्ति पर कहा- समय-समय पर संगठन में बदलाव होते रहते हैं। चुनाव छह महीने दूर है। इसलिए लोगों को जिम्मेदारियां दी गई हैं। इसका अच्छा संकेत जाएगा। सीपी जोशी से मुलाकात के सवाल पर कहा - यह पूरी तरह अनौपचारिक मुलाकात थी। आज शाम को सीपी जोशी की तरफ से प्रसादी का आयोजन रखा गया है। शाम को कार्यक्रम में जाना संभव नहीं हो पाएगा, इसलिए अभी मुलाकात कर ली।

खिलाड़ियों की आंख में आंसू सबके लिए शर्म की बात

पायलट ने जंतर-मंतर पर धरना दे रहे खिलाड़ियों का खुलकर समर्थन करते हुए कहा- जिन खिलाड़ियों ने देश के लिए मेडल जीते, आज उनको न्याय के लिए सड़कों पर उतरना पड़ा है। उनकी आंखों में आंसू, हम सभी के लिए शर्म की बात है। अपने नेता को बचाने के लिए केंद्र की सरकार खिलाड़ियों को न्याय से वंचित रख रही है। भारत सरकार जल्द से जल्द खिलाड़ियों के साथ न्याय करे और दोषी को सजा दे। पायलट ने कहा- नौजवान पहलवान जंतर-मंतर पर बैठे हैं। कोर्ट के दखल के बाद एफआईआर दर्ज हो रही है।

'समलैंगिक विवाह एक अप्राकृतिक सिचुएशन'

विहिप अध्यक्ष बोले- सुप्रीम कोर्ट समझती है कुछ होना चाहिए तो संसद में दें; कानूनी आदेश से न्याय उचित नहीं

जयपुर. कासं

विश्व हिंदू परिषद(विहिप) के राष्ट्रीय अध्यक्ष आर एन सिंह ने समलैंगिकता को अप्राकृतिक बताया। कहा कि जिस प्रकार की तत्परता सुप्रीम कोर्ट ने समलैंगिकता (सेम सेक्स मैरिज) पर दिखाई है। मुझे नहीं लगता कि इतनी तत्परता से इस पर कोई फैसला देना चाहिए। समलैंगिक विवाह एक अप्राकृतिक सिचुएशन है। इसको बढ़ावा नहीं देना चाहिए। सिंह शनिवार सुबह 10.30 बजे श्री रामदास सेवा संस्थान 'ज्योति सदन' की नई बिल्डिंग के उद्घाटन कार्यक्रम में शामिल होने आए थे। डॉ आर एन सिंह ने कहा- समाज का कोई भी अंग इसको मानने वाला नहीं है। अगर सुप्रीम कोर्ट समझती है कि इस पर कुछ होना चाहिए तो निवेदन करना चाहूंगा कि इसे विधायिका (संसद) में दें। देश के लोग आपस में चर्चा करके कोई निर्णय लेंगे। वही समाज हित में होगा। इस तरह से कोई कानूनी आदेश के हिसाब से न्याय करना उचित नहीं है। विहिप इसका विरोध करती है। उन्होंने कहा कि सेम सेक्स मैरिज को कानूनी मान्यता दिए जाने की मांग उनका मौलिक अधिकार न होकर वैधानिक अधिकार हो सकता है। जो केवल संसद द्वारा कानून बनाकर ही संरक्षित किया जा सकता है। संसद पहले ही ट्रांसजेंडर (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम 2019 को लागू कर चुकी है। इसलिए इस समुदाय का कहना कि उनके साथ भेदभाव किया जा रहा है। उन्हें मूल अधिकार नहीं किए गए हैं, गलत है।

जैन छात्रावास में होगा समर केम्प का आयोजन

01 से 30 मई तक दिए जाएंगे प्रशिक्षण

मनोज नायक. शाबाश इंडिया

ग्वालियर। वर्तमान में संस्थाएं सेवाभाव भूलकर जहां धन कमाने में लगी हैं वहीं ग्वालियर नगर की जैन समाज की सेवाभावी प्रतिष्ठित संस्था वीर सेवा समिति समाजसेवा की ओर निरन्तर अपने कदम बढ़ा रही है । ग्रेटर ग्वालियर जैन समाज की संस्था वीर सेवा समिति अनेकों वर्षो से जैन सेंट्रल हाई स्कूल (जैन छात्रावास) का संचालन करती आ रही है । समिति ने शिक्षा के साथ साथ स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के क्षेत्र में भी समाजोत्थान के कार्यों को गति प्रदान की है । सभी वर्ग के बच्चों एवं महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए अनेकों योजनाएं संचालित की जा रहीं हैं। वीर सेवा समिति (जैन छात्रावास) के मंत्री डॉ. मुकेश जैन ने समाजोत्थान के सेवाभावी कार्यो की जानकारी देते हुए बताया कि राजपायगा रोड (माधव डिस्पेंसरी के सामने) ग्वालियर में संस्था के विशाल भवन एवं प्रांगण में विद्यालय संचालित है। उसी में प्रतिदिन प्रातः 10 बजे से 12 बजे तक होम्योपैथिक चिकित्सालय में सभी प्रकार के असाध्य रोगों का परीक्षण कर निःशुल्क दवाइयां प्रदान की जाती हैं।

प्रत्येक माह की 30 तारीख को रत्न ज्योति चेरिटेबल फाउंडेशन के सहयोग से नेत्र परीक्षण एवं मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविर का आयोजन किया जाता है जिसमें चयनित मरीजों के निःशुल्क ऑपरेशन कर चश्मा, दवाई, कम्बल आदि प्रदान किये जाते हैं। डॉ. जैन के अनुसार बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए इस वर्ष ग्रीष्मकालीन अवकाश में समर केम्प का आयोजन 01 मई से 30 मई तक किया जा रहा है। एसोसिएशन ऑफ ग्वालियर यूथ सोसायटी एवं दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप ग्रेटर ग्वालियर के सहयोग से आयोजित समर केम्प में ड्रॉइंग, क्राफ्ट, मेहंदी, योगा, वेस्टर्न डांस, अबेकस, कराटे, शतरंज, जुम्बा, लोकनृत्य आदि विधाओं का प्रशिक्षण योग्य एवं अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा दिया जाएगा । इन सभी समाजोत्थान के सेवाभावी योजनाओं का लाभ कोई भी किसी भी वर्ग का व्यक्ति ले सकता है । संस्था का उद्देश्य मानव सेवा करना है, न कि धन कमाना । किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संस्था के कार्यालय में प्रतिदिन प्रातः 08 बजे से शाम 06 बजे तक सम्पर्क किया जा सकता है ।

श्री आदिनाथ निर्वाण स्थली अष्टापद बद्रीनाथ के पट आचार्य श्री निर्भयसागर जी महाराज के सानिध्य में खुले

राजेश जैन दद्दू. शाबाश इंडिया।

इंदौर। आदिनाथ आध्यात्मिक अहिंसा फाउंडेशन अष्टापद बद्रीनाथ ट्रस्ट के ट्रस्टी अमित कासलीवाल ने बताया कि श्री आदिनाथ निर्वाण स्थली अष्टापद बद्रीनाथ तीर्थ क्षेत्र के पट 27 अप्रैल 2023 गुरुवार को आचार्य श्री निर्भय सागर जी महाराज एवं आचार्य श्री सुबल सागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य में पारस टीवी चैनल परिवार के डायरेक्टर प्रकाश मोदी, अनिल मोदी, पंकज मोदी एवं विनोद मोदी के कर कमलों से खोले गए। इस अवसर पर दिगंबर जैन समाज के भामाशाह , मुनि भक्त अशोक पाटनी(आर. के. मार्बल) किशनगढ़ परिवार सहित उपस्थित थे एवं उन्होंने श्री जी के प्रथम कलश एवं शांति धारा करने का सौभाग्य भीअर्जित किया। पट उद्घाटन के पूर्व ध्वजारोहण इंजी. (डॉ) श्याम एस सिंघवी उदयपुर ने किया एवं श्री अतुलजी मूणत सपरिवार ने अखंड दीप प्रज्वलित किया। इस अवसर पर आचार्य द्वय ने आशीर्वचन देते हुए अष्टापद क्षेत्र में किये गए विकास एवं निर्माण कार्य एवं तीर्थ क्षेत्र को सुदर्शनीय एवं यात्रियों के लिए सर्व सुविधा युक्त बनाने के लिए ट्रस्ट कमेटी का गुणानुवाद करते हुए आशीर्वाद दिया।

ध्वजारोहण के साथ भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव व रथयात्रा, विश्व शांति महायज्ञ का हुआ शुभारम्भ

धर्म के लिए जो अवसर मिले वो ही है शुभ अवसर: आचार्य विवेक सागर

विवेक पाटोदी. शाबाश इंडिया

सीकर। शहर के चरणसिंह कॉलोनी, नवलगढ़ रोड (खेत) स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में जीर्णोद्धार व नवीन निर्माण के पश्चात भव्य पंचकल्याणक महोत्सव का भव्य शुभारम्भ आचार्य श्री 108 सुमतिसागर जी महाराज के प्रखर प्रवक्ता चर्याचूड़ामणि, राष्ट्रसंत सप्तम्-पट्टाधीश आचार्य श्री 108 विवेकसागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में हुआ। प्रचार मंत्री विवेक पाटोदी ने बताया कि प्रातः काल जाप्यानुष्ठान, जिनेन्द्र अर्चना, गुरु आज्ञा के पश्चात मंगल घट यात्रा व शोभायात्रा निकाली गई। मंगल घट यात्रा में जहां एक ओर सभी महिलाएं एक ही रंग की वेशभूषा, साड़ियों में सिर पर कलश लिए चल रही थी, वही इसके पीछे श्री जी की भव्य शोभायात्रा आचार्य श्री विवेक सागर जी ससंघ के सानिध्य में आगे बढ़ रही थी। श्री जी के रथ के आगे अष्ठकुमारिया जैन ध्वज हाथों में लिए थी। शाही लवाजमे में सबसे आगे सौधर्म इंद्र गजराज पर विराजित थे। शोभायात्रा में बच्चे, युवा, पुरुष सभी उम्र के धर्मावलम्बी बैंड की धुन के साथ भक्ति करते हुए सम्मिलित थे। महोत्सव के अध्यक्ष जयप्रकाश लालास व महामंत्री सुनील पहाड़िया ने बताया कि शोभायात्रा जैन मंदिर प्रांगण से प्रारम्भ होकर चरणसिंह कॉलोनी स्थित समारोह स्थल चंद्रलोक मैरिज गार्डन परिसर पहुँची। शनिवार से प्रारम्भ इस महा महोत्सव में देश के विभिन्न स्थानों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु कार्यक्रम में शामिल हो रहे हैं। कार्याध्यक्ष पंकज दुधवा व कोषाध्यक्ष प्रदीप सेठी ने बताया कि घटयात्रा व श्री जी के रथ के कार्यक्रम स्थल पहुँचने पर आचार्य श्री विवेक सागर जी महाराज के आशीर्वाद से प्रतिष्ठाचार्य पंडित विमल जैन बनेठा के निर्देशन में ध्वजारोहण संपन्न हुआ। ध्वजारोहण का सौभाग्य केसरीमल पदमचंद अरुण कुमार पिराका परिवार को मिला। ध्वजारोहण के पश्चात मंडप शुद्धि और मंगल कलश व अखण्ड दीप की स्थापना हुई। पांडाल उद्घाटन महावीर प्रसाद महेश कुमार मनीष कुमार काला लालास वाले परिवार द्वारा किया गया। मंगल कलश स्थापना का सौभाग्य प्रेम देवी, मनोज कुमार सीमा देवी बज पलाड़ा परिवार को प्राप्त हुआ। अखंड दीप का सौभाग्य मोतीलाल नवीन कुमार किशोर बड़जात्या परिवार नागौर को मिला। चित्र अनावरण सीकर समाज के तीनों गोठ के पदाधिकारियों द्वारा किया गया। संयोजक अजित जयपुरिया व मन्दिर कमेटी के कोषाध्यक्ष रवि पाटनी ने बताया कि कार्यक्रम में आगे कँवरीलाल राजेन्द्र छाबड़ा परिवार इम्फाल द्वारा आचार्य श्री के पाद प्रक्षालन किये गए व दानमल संपत कुमार रितेश कुमार सोगानी परिवार गुवाहाटी द्वारा आचार्य श्री को शास्त्र भेंट किया गया। इसके पश्चात आचार्य श्री के मंगल प्रवचन हुए।

क्या होता है पंचकल्याणक –

आचार्य श्री विवेक सागर जी ने अपने मंगल प्रवचन के दौरान बताया कि हर धर्म की अपनी प्राचीन परंपरा और सांस्कृतिक संस्कार होता है, जिससे उसका धर्म फलता-फूलता है और सांस्कृतिक परिवेश का नया निर्माण भी हुआ करता है। पंचकल्याणक महोत्सव प्राचीन सांस्कृतिक परिवेश की पृष्ठभूमि में होता है और नवीन संस्कृति के लिए वह प्रेरणा का कारण बनता है। क्योंकि आज की पीढ़ी धर्म को नही जानेगी, धार्मिक आयोजनों में सम्मिलित नही होगी तो वो अपने बच्चों को क्या शिक्षा देगी। अपने धर्म की वृद्धि के लिये धर्मात्माओं के लिए अपने शलाका पुरुषों के चरित को सामने रखकर के अपने कल्याण के लिये एवं धर्म के रहस्य को जानने के लिये उनके जीवंत प्रसंग को प्रकट करके कैसे आत्मा से परमात्मा तक की यात्रा पूर्ण की जाती है उसी का प्रतीक है पंचकल्याणक महोत्सव की क्रिया और धर्म संस्कार का संचार जनमानस तक पहुंचाने का माध्यम है। संसार के सारे राग-रंग और इन्द्रियों के विषयों के प्रसंगों से ऊपर उठकर अपने आत्मकल्याणक के लक्ष्य को प्राप्त कर लेना ही पंचकल्याणक है। संसार के सारे पापो से मुक्ति प्राप्त कर लेना ही पंचकल्याणक है। संसार के परिभ्रमण से मुक्ति प्राप्त कर लेना ही पंचकल्याणक है। जन्म-मरण और संसार के विषय कषायों की प्रवृत्ति से मुक्ति प्राप्त कर लेना ही पंचकल्याणक है। वहीं प्रतिष्ठाचार्य पंडित विमल जैन बनेठा वाले ने बताया कि तीर्थकर भगवान के गर्भ में आने से पूर्व इंद्र की आज्ञा कुबेर माता-पिता के गृहागंण में दिव्य रत्नों की वर्षा करता है। श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी ये छह कुमारी आदि देवियां माता की सेवा के लिए उपस्थित होती हैं। पुण्योदय से माता सोलह स्वप्न देखती हैं। वे प्रातः उठकर अपने पति से स्वप्नों का फल पूछती हैं। पति बताते हैं कि तुम्हारे गर्भ से तीनों लोकों के नाथ तीर्थकर भगवान का जन्म होने वाला है। माता यह बात सुनकर हर्षित होती है। तीनों लोकों में आनन्द छा जाता है।

वेद ज्ञान

टालमटोल की आदत से बचें

अनेक लोग हैं जो समय प्रबंधन के महत्व को समझते नहीं हैं। समय प्रबंधन को समझने वाले लोग बड़े चुस्त, फुर्तीले और दृढ़ निश्चयी होते हैं। ऐसे लोग एक काम को पूरा करके तत्काल दूसरा कार्य हाथ में ले लेते हैं और उसे पूरा करने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देते हैं। भविष्य ऐसे ही लोगों का होता है। यदि आप कार्य को तत्काल संपन्न करते हैं तो आप अनेक उलझनों से बच जाते हैं। काम को तुरत-फुरत संपन्न कर डालने की आदत से हमारी शक्तियां और योग्यताएं संगठित रहती हैं। उनमें कभी भी बिखराव की संभावना नहीं होती। कैलीफोर्निया के मनोवैज्ञानिक लेनोरा ने इस विषय पर शोध किया। उनका मानना था कि काम को टाल देने की आदत से आगे चलकर कई जटिल समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। लेनोरा का कहना था कि अक्सर लोग काम को शुरू करने से पहले ही डर जाते हैं। उन्हें यह शंका हरदम घेरे रहती है कि वे यह काम पूरा कर पाएंगे कि नहीं। ऐसे लोग हरदम काम का बोझ लादे रहते हैं। लेनोरा का निष्कर्ष था कि संबंधित व्यक्ति से पूछा जाना चाहिए कि वह किस तरह के काम को टालता है। अगर ऐसा किया गया तो उस व्यक्ति को समय पर कार्य करने के लिए प्रवृत्त किया जा सकता है। किसी भी काम को नियत समयावधि में पूर्ण करने के लिए शुरू-शुरू में आलस्य आता है। यह बहुत स्वाभाविक है। ऐसा इसलिए, क्योंकि आप अपनी एक पुरानी बुरी आदत बदल रहे होते हैं। मगर काम शुरू कर दें तो यह आलस्य धीरे-धीरे दूर होता जाता है। यदि कई काम हैं तो उनकी प्राथमिकता के आधार पर एक सूची बना लें। कम समय लगने वाले काम को सबसे पहले निपटा लें। जो काम अन्य सभी से भारी है उसके लिए एक खास समय तय करें। कामों को क्रमबद्ध और व्यवस्थित ढंग से किया जाए तो चौबीस घंटे कम नहीं होते। हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि जीवन में सफल लोगों ने इन चौबीस घंटों का सही-सही उपयोग कैसे किया। एक बार यदि आपने समय प्रबंधन की आदत डाल ली तो छोटा हो या बड़ा हर काम तय समय-सीमा में पूरा हो जाएगा और दूसरा दिन आपके नए कामों के लिए पूरी तरह से खाली रहेगा। जब आप किसी काम को पूरा कर लें तो खुद ही संतोष करें।

संपादकीय

हिंसक समूहों की मौजूदगी कायम...

दंतेवाड़ा के एक इलाके में नक्सलियों की मौजूदगी की सूचना के बाद डीआरजी बल यानी डिस्ट्रिक रिजर्व गार्ड की एक टुकड़ी को वहां भेजा गया था। छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा में नक्सलियों के हमले में ग्यारह जवानों की शहादत से एक बार फिर यही जाहिर हुआ है कि राज्य में इस मसले के हल के लिए चलने वाली तमाम कवायदों के बावजूद हिंसक समूहों की मौजूदगी कायम है। नक्सली आज भी घात लगा कर इतना बड़ा नुकसान पहुंचाने में कामयाब हो जा रहे हैं। हालांकि ऐसी हर घटना के बाद सरकार और संबंधित महकमों की ओर से यही भरोसा दिया जाता है कि इसके जिम्मेदार लोगों को बख्शा नहीं जाएगा और नक्सलियों के खात्मे के लिए अभियान तेज किया जाएगा। मगर सवाल है कि हर कुछ समय बाद नक्सली समूह सुनियोजित हमले को अंजाम देकर बड़ा नुकसान

कर देते हैं, उसमें जवानों की जान चली जाती है तो इसे किस तरह की सुरक्षा-व्यवस्था के तौर पर देखा जाएगा! गौरतलब है कि दंतेवाड़ा के एक इलाके में नक्सलियों की मौजूदगी की सूचना के बाद डीआरजी बल यानी डिस्ट्रिक रिजर्व गार्ड की एक टुकड़ी को वहां भेजा गया था। वापसी के क्रम में नक्सलियों ने अरनपुर मार्ग पर इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस यानी आईईडी विस्फोट कर दिया, जिसमें डीआरजी के दस जवान और एक वाहन चालक की जान चली गई। इस हमले से साफ है कि डीआरजी जवानों के अभियान की जानकारी नक्सलियों को पहले लग गई थी और इसीलिए उन्होंने योजना बना कर यह हमला किया। यह इस तरह की कोई पहली घटना नहीं है। ऐसे हमले के बाद सरकार और सुरक्षा बलों की सख्ती जब बढ़ती है तब ऐसे समूह कुछ वक्त तक शांत पड़ जाते हैं, लेकिन फिर मौका मिलते ही हिंसक हमले के जरिए अपनी मौजूदगी दर्ज कराने की कोशिश करते हैं। बुधवार को हुई घटना में जिस डीआरजी के जवानों की जान गई, वे छत्तीसगढ़ पुलिस के खास जवान हैं, जिन्हें केवल नक्सलियों से लड़ने के लिए भर्ती किया गया है। इस प्रशिक्षित समूह की विशेषता यह है कि इस समूह में आत्मसर्पण करने वाले और बस्तर के वातावरण में पले-बढ़े लोग शामिल होते हैं। ये लोग चूंकि जटिल जंगल और उसमें अपनी गतिविधियां संचालित करने वाले नक्सलियों के काम करने की प्रकृति को समझते हैं, इसलिए उनके जरिए कई मौकों पर अहम कामयाबी दर्ज की गई है। शायद यही वजह है कि डीआरजी के जवान खासतौर पर नक्सलियों के निशाने पर थे। हालांकि इस तरह के हमलों में कई मौकों पर सीआरपीएफ के जवानों पर भी घातक हमले किए गए हैं। विचित्र यह है कि इस तरह की हिंसा के सहारे व्यापक राजनीतिक मुद्दों का हल खोजने का दावा करने के बावजूद नक्सली समूह अपने लक्षित तबकों के बीच भी किसी ठोस हल का रास्ता नहीं दर्शा पाए हैं। दूसरी ओर, इन नक्सलियों के घातक हमलों से निपटने के लिए सरकार की ओर से अब तक जितनी भी कोशिशें और नीतिगत पहलकदमी हुई, उनका असर सिर्फ तात्कालिक महत्त्व के रूप में ही दर्ज किया जा सका।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

नए खतरे

इसमें कोई दो राय नहीं कि आज रोजमर्रा की जरूरत के लिए स्मार्टफोन या मोबाइल हमारे जीवन का हिस्सा बन गए हैं। लेकिन सुविधा साबित हो रहा कोई सामान अगर हमारी सेहत के लिए बहुस्तरीय चुनौती खड़ी कर रहा हो तो एक बार ठहर कर उसके उपयोग को लेकर सजग होने की जरूरत है। हाल ही में मोबाइल और इसके उपयोग को लेकर हुए एक अध्ययन में जिस तरह की चिंताएं जाहिर की गई हैं, वे बताती हैं कि हर वक्त साथ रहने वाला मोबाइल मामूली लापरवाहियों की वजह से लोगों की सेहत के लिए चुपके-चुपके कई तरह के जोखिम पैदा कर रहा है, कई बीमारियों को न्योता दे रहा है। अध्ययन में यह पाया गया कि जो मोबाइल हमारे हाथ में एक तरह से अभिन्न होता गया है, वह दिखने में तो साफ-सुथरा लगता है, लेकिन वास्तव में शौचालय की सीट से भी गंदा होता है। कोई काम करते या खाते समय भी फोन का उपयोग करने के साथ-साथ उसे हर तरह की सतह पर भी रख दिया जाता है, जिससे उस पर रोगाणु जमा होते हैं। अंदाजा लगाया जा सकता है कि हमारे हाथ में आने के बाद उसका असर किन-किन शक्लों में हमारे शरीर में जाता होगा। यों मोबाइल फोन के उपयोग में अतिरेक के संदर्भ में अक्सर कई तरह की चिंता जताई जाती रही है। इसके बावजूद इसे लेकर जागरूकता का स्तर अभी पर्याप्त नहीं है और लोगों के बीच इसके जोखिम के प्रति लापरवाही आम दिखती है। जबकि जीवाणु और विषाणुओं की दुनिया कुछ ऐसी है कि पता भी नहीं चलता है और उसके संक्रमण से शरीर में कोई बड़ा नुकसान हो जाता है। मोबाइल फोन के सूक्ष्मजीवी उपनिवेशन पर किए गए कई अध्ययनों में बताया गया है कि वे कई अलग-अलग प्रकार के संभावित रोगजनक जीवाणु से दूषित हो सकते हैं। ये जीवाणु त्वचा संक्रमण, डायरिया, तपेदिक से लेकर मूत्र पथ में संक्रमण तक के वाहक बन सकते हैं। नए शोधों के ऐसे संकेत ज्यादा चिंता का कारण होने चाहिए कि फोन पर कई रोगजनक जीवाणु प्रतिरोधी होते हैं। यानी इनकी वजह से हुई बीमारी का इलाज पारंपरिक दवाओं के जरिए नहीं किया जा सकता और अगर ये त्वचा, आंत या फिर श्वास नली में संक्रमण का कारण बन जाए तो किसी की जान भी जा सकती है। जाहिर है, शहरों-महानगरों से लेकर गांवों तक में लोगों की जीवनशैली में अभिन्न हो चुका मोबाइल जितना सुविधाजनक है, उसके समांतर सेहत के लिए यह जोखिम से भी भरा हुआ है। हालांकि इसके जरिए संक्रमण के पहलू से इतर इसके विकिरण से भी कई गंभीर रोग होने की आशंका जताई जाती रही है। इसके जरिए विद्युत चुंबकीय तंरगों के नुकसान को लेकर भी सचेत किया जाता रहा है। हमेशा साथ रखने पर विकिरण की वजह से दिमाग की कोशिकाएं संकुचित हो सकती हैं, जिससे दिमाग में आक्सीजन की पर्याप्त मात्रा नहीं पहुंच पाती। फिर इसके इस्तेमाल की आदत से जुड़े मनोवैज्ञानिक नतीजे भी आज लोगों के जी का जंजाल बनते गए हैं। यह छिपा नहीं है कि अगर कोई व्यक्ति स्मार्टफोन का अत्यधिक उपयोग करता है तो उसे बिना काम के भी बार-बार अपना मोबाइल उठा कर देखने की लत लग जाती है। इसके नतीजे में किसी काम में एकाग्रता और धीरज खो देने से लेकर चिड़चिड़ापन जैसी कई व्यवहारगत समस्याएं पैदा हो रही हैं। जाहिर है, आज अमूमन हर मामले में एक तरह से जरूरी बनते गए मोबाइल फोन के इस्तेमाल को लेकर थोड़ी सावधानी बरतना वक्त का तकाजा है, क्योंकि अगर सेहत के मोर्चे पर व्यक्ति दुरुस्त है तभी वह किसी तकनीकी संसाधन का बेहतर लाभ उठा पाएगा।

रामस्नेही चिकित्सालय की क्लीनिकल एडमिनिस्ट्रेर डॉ.श्रुतकीर्ति हरितश को राष्ट्रपति ने किया सम्मानित

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। अन्तरराष्ट्रीय रामस्नेही सम्प्रदाय के पीठाधीश्वर आचार्य श्रीरामदयालजी महाराज द्वारा आशीर्वाद प्रदत रामस्नेही चिकित्सालय भीलवाड़ा में क्लीनिकल एडमिनिस्ट्रेर पद पर सेवाएं दे रही डॉ.श्रुतकीर्ति हरितश को बेहतरीन अकादमिक प्रदर्शन के लिए भारत की राष्ट्रपति माननीय डॉ. द्रोपदी मुर्मु ने स्वर्णपदक प्रदान कर सम्मानित किया है। उन्हें ये सम्मान हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित बी.एच.एम.एस. परीक्षा में विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में प्रदान किया गया। डॉ. श्रुतकीर्ति को विश्वविद्यालय के एक लाख से अधिक विद्यार्थियों में से विभिन्न परीक्षाओं में प्रथम रहने वाले 100 से अधिक टॉपर में से भी राष्ट्रपति से सम्मान पाने के लिए चुनी गई दस स्टूडेन्ट में शुमार होने का गौरव प्राप्त हुआ। विश्वविद्यालय की ओर से शिमला में आयोजित समारोह में राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मु ने उन्हें स्वर्णपदक प्रदान किया। उनकी इस उपलब्धि पर अन्तरराष्ट्रीय रामस्नेही सम्प्रदाय के पीठाधीश्वर आचार्य श्रीरामदयालजी महाराज ने भी आशीर्वाद प्रदान करते हुए भविष्य में भी समर्पित भाव से सेवा करने के साथ और अधिक श्रेष्ठ कार्य करने के लिए प्रेरणा प्रदान की। रामस्नेही चिकित्सालय प्रबंध समिति एवं पूरे चिकित्सालय परिवार ने खुशी जताते हुए इसे संस्थान के लिए गौरव का पल बताया और कहा कि उन्हें खुशी है कि ऐसी युवा प्रतिभाएं चिकित्सालय परिवार से जुड़ कर श्रेष्ठ सेवाएं प्रदान कर रही है। समिति ने उम्मीद जताई कि इस सम्मान से चिकित्सालय के अन्य स्टॉफ को भी मानव सेवा के कार्य में और अधिक बेहतर सेवाएं देने के लिए प्रोत्साहन प्राप्त होंगा।

प्राप्त ज्ञान का लाभ पीड़ित मानवता की सेवा में मिलेगा

शिमला में राष्ट्रपति से स्वर्णपदक प्राप्त कर भीलवाड़ा लौटी रामस्नेही चिकित्सालय की क्लीनिकल एडमिनिस्ट्रेर डॉ.श्रुतकीर्ति हरितश ने कहा कि राष्ट्रपति से मिला सम्मान जीवन का गौरवमय पल है जो उन्हें और अधिक बेहतर कार्य करने का हौंसला प्रदान करेंगा। उनका लक्ष्य रहेगा कि विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान जो भी ज्ञान प्राप्त किया है उसका लाभ पीड़ित मानवता की सेवा के दौरान मिले और चिकित्सालय परिसर में आने वाले रोगियों को बेहतरीन सेवाएं उपलब्ध कराई जा सके।

नेटथियेट पर बाँसुरी के सुरीले स्वर बॉसुरी पर पुलकित हुई राग यमन

जयपुर. शाबाश इंडिया

नेटथियेट कार्यक्रमों की श्रृंखला में केड झुंझुनू के उभरते बांसुरी वादक नवरतन चारण ने जब बांसुरी पर अपने स्वर छेड़े तो लगा श्रीकृष्ण की बांसुरी अटखेलियां करती हुई गोपियों को रिझा रही है। नेटथियेट के राजेन्द्र शर्मा राजू ने बताया कि जयपुर के उभरते सुरीले बांसुरी वादक नवरतन ने शास्त्रीय राग यमन कार्यक्रम का शुरूआत किया। उन्होंने राग यमन में अलाप, बंदिश, तीन ताल मध्य लय में बजाकर दर्शकों को रोमांचित किया। इसके बाद उन्होंने राग हंस ध्वनि में आलाप, जोड़ तीन ताल, मध्यलय में एक बंदिश सुनाकर दर्शकों से दाद पाई अंत में उन्होंने राजस्थानी लोकधुन मांड में पधारो म्हारे देश की धुन बजाकर कार्यक्रम को परवान चढ़ाया। ज्ञात रहे कि कलाकार नवरतन ने बांसुरी वादन की शिक्षा यासीन खां चिडावा वालों से ली। आपके साथ तबले पर युवा तबला वादक नरेन्द्र सिंह ने अपनी उंगलियों का ऐसा जादू बिखेरा कि दर्शक ऐसी सधी हुई संगत से बॉसुरी की मीठी तान में खो गये। कैमरे पर मनोज स्वामी, प्रकाश सागर गढवाल, संगीत संयोजन तपेश शर्मा, मंच सज्जा पुनम चौधरी, अंकित शर्मा नोनू,देवांग सोनी एवं जिवितेश शर्मा की रही। कार्यक्रम संयोजक नवल डांगी एवं गुलाम फरीद ने इम्पीरीयल प्राइम कैपिटल की ओर स्मृति चिन्ह भेंट कर कलाकारों को सम्मानित किया।

महासमिति मासिक णमोकार पाठ संपन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगम्बर जैन मन्दिर पाटनीयान सांगानेर में दिगम्बर जैन महासमिति चौमूबाग इकाई के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित णमोकार मंत्र का सामूहिक पाठ संगीतमय पूर्ण भक्तिभाव के साथ सम्पन्न हुआ। द्वीप प्रज्ज्वलन छुट्टनलाल, दिनेशकुमार, शुभकुमार जैन मालपुरा परिवार ने किया। शास्त्र विराजमान बाबूलाल बोहरा ने किया। महिला प्रकोष्ठ द्वारा मंगलाचरण के पश्चात आशीष पाटनी एवं मुकेशकुमार छाबडा ने पूर्ण भक्तिभाव के साथ सामूहिक रूप से णमोकार महामंत्र की माला एवं सुन्दर भजन प्रस्तुत किये जिसमें सभी लोग भगवान की भक्ति में मगन रहे। तत्पश्चात नये सदस्यों और विशिष्ट धर्मप्रेमी बन्धुओं का प्रहलाद जैन नेवटा, राजकुमार गोधा, अशोक रेनवाल, सुधीर जैन , श्रीमती पुष्पलता बडजात्या, श्रीमती कमलादेवी अजमेरा आदि ने स्वागत किया। इकाई अध्यक्ष डॉ. अरविन्द कुमार जैन ने सांगानेर मन्दिरों की प्राचीनता एवं अतिशय के वारे में बताया। जैनों की काशी कहे जाने वाले जयपुर नगरी की राष्ट्रीय/ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान कराने वालों में संघी मन्दिर के भगवान आदिनाथ, दीवान अमरचन्द का शेर को जलेवी खिलाना, पण्डित टोडरमलजी का दक्षिण से धवला, जयधवला की प्रति मंगाने का प्रयास, सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका टीका की रचना, हाथी द्वारा मृत्यु दंड का प्रसंग, फागी में पण्डित जयचन्दजी छावडा द्वारा समयसार वचनिका का रचना, मुनि प्रमाणसागरजी द्वारा सल्लेखना आन्दोलन, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का धर्म प्रचार में योगदान आदि प्रसंगों को सुनाया। दिगम्बर जैन महासमिति राजस्थान अंचल द्वारा लगने वाले दि.14 मई से 23 मई तक 10 दिवसीय ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिक्षण शिविर हर मन्दिर में लगाने का आह्वान किया। मई माह का णमोकार पाठ श्री दिगम्बर जैन मन्दिर गोदिकान सांगानेर में करने की घोषणा संयोजक आशीषजी पाटनी ने की। इस अवसर पर द्वीप प्रज्ज्वलन कर्ता दिनेश इसके लिए महासमिति ने आभार प्रकट किया। महासमिति की ओर से पाटनीयान मंदिर कमेटी का आभार प्रदर्शन राजकुमार गोधा इकाई मंत्री ने किया। अन्त में शान्तिपाठ एवं कायोत्सर्ग के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

नहीं रहे, सेवाभावी कर्मठ समाजसेवी गोरधन ठाकवानी

जयपुर. कासं। जयपुर, सिंधी समाज जयपुर के सेवभावी एवं कर्मठ समाजसेवी गोरधन ठाकवानी का देहान्त दिनांक 28.04.2023 को हुआ। जिनका दाह संस्कार आदर्श नगर, जयपुर स्थित मोक्षधाम पर किया गया।

उनके भतीजे मनोज ठाकवानी ने बताया कि गोरधन ठाकवानी जी की आयु 77 वर्ष रही, भारत-पाकिस्तान के विभाजन के उपरांत ठाकवानी परिवार जयपुर में आकर रहने लगा। गोरधन ठाकवानी ने कड़ी मेहनत करके सवाई मानसिंह अस्पताल, जयपुर के सामने चाय की थड़ी लगाकर मरीजों एवं जरूरतमंदों 40 वर्षों तक सेवा की तथा यह स्थान गोरधन की थड़ी के नाम से जाना जाने लगा।

मिलेट्स को खाने में शामिल करने में क्या व्यवहारिक कठिनाइयां है?

मोटे अनाज और आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयां...

शाबाश इंडिया

व्यावहारिक नजरिये से देखा जाए तो मोटा अनाज खाया जाए तो आज भी बहुत सारी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं में कमी आ सकती है और गेहूं बहुत सी बीमारियों का कारण बन रहा है और ग्लूटेन का होना एक बहुत बड़ा कारण है।

प्रश्न है ''क्या मोटा अनाज पुनः वापस लाना सहज और व्यवहारिक है ?''

ज्वार और बाजरे को छोड़कर बाकी मोटे अनाजों को वापस लाना व्यावहारिक तो है लेकिन सहज नहीं है। अगर भारत की बात की जाए तो इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मिलेटस रिसर्च, हैदराबाद के अनुमान के अनुसार भारत एशिया का 80 प्रतिशत व विश्व का 20 प्रतिशत मोटे अनाज का उत्पादन करता है। हरित क्रांति के बाद इन कम उत्पादन देने वाली फसलों के क्षेत्रफल में निरंतर कमी आयी। विश्व खाद्य संगठन के अनुसार, वर्ष 2020 में मोटे अनाजों का विश्व उत्पादन 30.464 मिलियन मीट्रिक टन था जिसमे भारत की हिस्सेदारी 12.49 एमएमटी मिलियन मीट्रिक टन थी, जो कुल मोटे अनाजों के उत्पादन का 41 प्रतिशत है। भारत में वर्ष 2021-22 में मोटे अनाजों के उत्पादन में 27 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई। इनका निर्यात भी निरंतर बढ़ रहा है अतः व्यावहारिक रूप से मोटे अनाज की खेती संभव है और निरंतर सरकारी प्रयासों से बढ़ रही है लेकिन ये सब उतना आसान और सहज भी नहीं है। मोटे अनाजों से किसानो की दूरी के मुख्य कारण कम उत्पादकता, ज्यादा श्रम, कटाई उपरांत प्रौद्योगिकी की अनुपलब्धता, कम मूल्य आदि है वही दूसरी और गेहूं चावल की आसान उपलब्धता ने परंपरागत खाद्य पैटर्न को बदल दिया है। मोटे अनाज के प्रोडक्ट डेवलपमेंट, मार्केटिंग जैसे क्षेत्रों में अपर्याप्त निवेश भी एक बहुत बड़ा कारण है। दूसरी और उपभोक्ता की मोटे अनाज की दुरी के कारण है मोटे अनाज के साथ जुड़ा गरीबी का टैग, दैनिक भोजन में मोटे अनाजों का उपयोग के बारे में ज्ञान का अभाव, स्थानीय बाजार में मोटे अनाजों की उपलब्धता नहीं होना तथा उत्पादों की उच्च कीमतें। इन सबके बावजूद निर्यात की संभावनाओं को देखते हुए इसको बढ़ाने के लिए सरकार कृत संकल्पित है। आगामी 3 वर्ष में 25 प्रतिशत की वृद्धि संभावित है। मोटे अनाज को वापस लाना सहज क्यों नहीं है उसके कारण इस प्रकार है और उन्ही चुनौतियों से निपटकर मोटे अनाज की खेती को पुनर्स्थापित किया जाना होगा।

1. मोटे अनाज की कटाई उपरान्त प्रौद्योगिकी की उपलब्धता सिमित है इसलिए परिवहन की लागत बढ़ जाती है और मार्केटिंग चेनल बड़ी होने से कीमते बहुत बढ़ जाती है लेकिन किसान को अच्छी कीमत नहीं मिलती है।
2. मूल्य संवर्धित उत्पादः आज जबकि गेहूं मक्का और चावल के मूल्य संवर्धित उत्पादों से भाजार भरा हुआ है लेकिन मोटे के लिए उत्पाद विकास की अपार संभावनाएं होने के बाद भी विशेष कुछ नहीं है जिसे सुदृढ़ किये जाने की आवश्यकता है।
3. अच्छी उत्पादन क्षमता वाले बीजो तक किसान की पहुँच जिससे किसान इन मोटे अनाजों को लगाने के लिए प्रेरित हो।

इस बात में भी कोई शक नहीं है की मंहगी शादियों में बाजरा या मक्का की रोटी आवश्यक आयटम बन गयी है लेकिन रागी, ज्वार, बाजरा, मक्का, चना, कूटू आदि क्या जीवन के अंग बन सकते हैं ? तो इसके लिए में यहीं कहूंगा की किसी भी भोजन का अंग बनने के लिए किसी भी सामग्री का मूल्य उपयोग की गयी सामग्री के 10 - 20 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए वो भी तब जब उसके लाभ उपयोग की जा रही सामग्री से अधिक हो। इसका सबसे बढ़िया उदहारण है किनोवा। वर्ष 2015-16 में किसान से किनोवा की खरीद का मूल्य था 100 रुपये प्रति किलोग्राम, प्रोसेसिंग केवल कुछ ही जगह होती थी जिससे ट्रांसपोर्टेशन की लागत बहुत बढ़ जाती थी और तब एक ब्रांड का खुदरा कीमत थी 1200 रुपये प्रति किलोग्राम। दूसरा उदहारण है चिया सीड 2016 में किसान से खरीद कीमत थी 400 रुपये प्रति किलोग्राम और उपभोक्ता तक पहुँच थी 2400 रुपये प्रति किलोग्राम। धीरे धीरे प्रसंस्करण और उत्पादन बढ़ा और आज किनोवा 120 से 150 रुपये किलोग्राम और चिया सीड 300 से 500 रुपये प्रति किलोग्राम पहुँच गया है। किनोवा की कीमत आज चावल के बराबर हो गयी है तो लोगो ने किनोवा का इस्तेमाल आरम्भ कर दिया है और छोटे कस्बो तक में इसकी उपलब्धता हो गयी है। निसंदेह हमारी स्वाद ग्रंथियां गेहूं और चावल खाने की आदि हो चुकी है लेकिन किसी भी आदत को बनने में 21 दिन का समय पर्याप्त होता है। जब बजट में पहुँच होते ही लोग इनको भी वैसे ही लेंगे जैसे आज किनोवा को ले रहे है। बाजार मांग और आपूर्ति के सिद्धांत पर चलता है उपलब्धता बढ़ेगी तो कीमते कम होगी। यदि खान पान का अंग बनाने की सोची जाए तो घर से लेकर चाट की दुकान और रेस्टोरेंट या मिठाई से लेकर बेकरी तक गेंहू आधारित आटा , मैदा और सूजी का ही सम्राज्य है ये 101 प्रतिशत सत्य है। आज चारों तरफ गेहूं और चावल का साम्राज्य है। लेकिन जब किनोवा आया था तो खाया कैसे जाए मुझे भी नहीं पता था या चिया कैसे खाया जाए मुझे नहीं पता था मैंने स्वयं कई एक्सपेरिमेंट किये जिसमे चिया की चॉकलेट, चिया अंजीर बर्फी, चिया खजूर बर्फी बनायीं, किनोवा के पफ बनाने पर काम चालू है। बाजरे और रागी के बिस्कुट बन रहे है। धीरे धीरे ये उत्पाद भी बाजार में आएंगे बहुत से स्टार्टअप और स्वयं सहायता समूह इस पर काम कर रहे है। लोगो को इस दिशा में सोचकर अपने लिए रोजगार के अवसर खोजने चाहिए एक जिससे स्थानीय बाजार का लाभ उठा सकें। चने के बेसन से गुजराती खम्मन फाफड़ा बन जाते हैं , लेकिन गुजरात को छोड़ अन्यत्र इनको लगातार दो दिन भी नहीं खा सकते या कूटू की ये हालत है कि कोई अष्टमी और एकादशी दौनों का व्रत रखे तो अष्टमी को कूटू की पकौड़ी, चीला या परांठे पूड़ी खा कर एकादशी को कूटू से अरुचि बन जाती है नवदुर्गा के व्रत में पूरे 8 रोज कूटू खा नहीं सकते । ये भी सही है की किसी चीज को हम लगातार नहीं खा सकते है जैसे चना या कूटू का उदहारण लिया गया है। हर जगह की कुछ विशेष खाद्य आदते होती है आप उन्हें एक दम से 100 प्रतिशत नहीं बदल सकते है लेकिन धीरे धीरे जब आप शुरू करते है तो आदत वैसी ही हो जाती है। इसका सीधा उदहारण है एक उत्तर भारतीय दक्षिण में 4 - 6 साल रह लेता है तो रोजाना इडली खाना भी सीख जाता है और उसके खाने में भी दक्षिण भारतीय स्वाद आने लगता है। में जिस इलाके से हूँ वहां बाटी के साथ उड़द की दाल खायी जाती है लेकिन यहाँ अरहर की दाल खायी जाती है तो अब आदत में आ गया है खा लेते है।

डॉ पीयूष त्रिवेदी
आयुर्वेदाचार्य
चिकित्साधिकारी राजकीय
आयुर्वेद चिकित्सालय राजस्थान
विधानसभा,जयपुर।
9828011871

कोई चीज जब दिन चर्या में शामिल हो जाती है तो फिर अजीब नहीं लगता है। बाजरा भले ही राजस्थान गुजरात की जीवन चर्या का आवश्यक अंग हो, लेकिन दूसरे अन्य स्थानों पर बाजरा दो टाइम लगातार नहीं खाया जा सकता, नई पीढ़ी तो इसके रोटी परांठे तक बनाना नहीं जानती, मक्का का उपयोग तो केवल नूडल्स , पॉप कॉर्न और स्वीट कॉर्न से आगे नहीं बढ़ सकता, 'मक्के दी रोटी, सरसों दा साग' कह कर कोई चटखारे भले ही भरे, लेकिन रूटीन की नहीं भयंकर भूख में ही खाये जानी वाली डिश है ये इसका ये ही नहीं पता कि, इसकी रोटी अच्छी बनती है या परांठे पूड़ी ? ये ही हालत ज्वार की है रागी कोदों का तो किसी को ये ही नहीं पता कि ये खाया कैसे जाता है। बिल्कुल सही लिखा है जो फसल जहाँ होती है वहां के लोग उसके व्यंजन बनाना भी जानते है और उसको रोजाना खाते भी है। ये भी सही है नयी पीढ़ी को नहीं पता है इसके क्या व्यंजन बन सकते है और खाया कैसे जा सकता है। इस बारे में में यही कहूंगा जब देश किनोवा आया था पहली बार कोई नहीं जानता था खाया कैसे जाएगा आज गूगल पर आपको सेकड़ो रेसिपी मिल जायेगी इसको कैसे बनाया जाए, कैसे और कितना खाया जाए। मोटे अनाज की भी बहुत सी रेसिपी इंटरनेट पर उपलब्ध है। वैसे अनाज के साथ सबसे खासियत है उबाल कर तो खा ही सकते है और भारतीय तो जन्मजात शेफ है कुछ भी बना सकते है। थोड़े टाइम बाद आपको रागी बिरयानी, सांवा पुलाव, चीना मालपुआ, कांगनी लड्डू (अभी भी मिलते है), कुटकी की खीर भी देखने को मिल जाएंगे। अभी श्रीमती जी मुरादाबाद से मक्का की नमकीन लायी थी बढ़िया स्वाद था मैंने तो पहली बार ही देखा अब में बाजरे और ज्वार की नमकीन बनवाने के लिए हलवाई ढूंढ रहा हूँ। सबसे बड़ी बात तो ये है कि जब इन अनाजों का उपयोग नहीं है, केवल स्टेटस सिंबल है, तब तो इनकी कीमत उत्पादक स्थलों पर 20-25 रुपिये से शुरू होकर रिटेलर तक पहुंचते पहुंचते 80-120 रुपए प्रति किलो हो जाती है यदि इनका उपयोग शुरू हो गया तो कहां से आपूर्ति होगी इनकी ? उत्पादन दर के कारण बाजरा मक्का को छोड़ अन्य मोटे अनाज तो किसान की मजबूरी हैं चॉइस कभी नहीं बन सकते। ये भी बिलकुल सही है वर्तमान में यह स्टेटस सिंबल ही है क्योंकि ज्वार और बाजरे को छोड़कर ये आम उपभोक्ता की पहुँच में नहीं है। इसमें कोई शक नहीं उत्पादक स्थल से किमत बहुत कम होती है और उपभोक्ता तक पहुँचते हुए कीमते बहुत बढ़ जाती है। चूँकि वर्तमान में आपूर्ति स्थल कम है इसका क्षेत्रफल बढ़ेगा तो उत्पादन भी बढ़ेगा, प्रोसेसिंग की सुविधाएँ बढ़ेगी, मार्केटिंग चैनल बढ़िया होंगे तो लगभग इसी कीमत में आम उपभोक्ता तक पहुँच सुनिश्चित होगी। उत्पादन लागत एक महत्वपूर्ण घटक है।

राज्यपाल से मिला जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर का प्रतिनिधिमण्डल

उदयभान जैन. शाबाश इंडिया

हस्तिनापुर। दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप- हस्तिनापुर के मंत्री विजय कुमार जैन ने लखनऊ स्थित राजभवन में प्रदेश की राज्यपाल महामहिम श्रीमती आनंदीबेन पटेल से मुलाकात की, जिसमें उन्होंने जम्बूद्वीप रचना की पावन प्रेरिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का आशीर्वाद श्रीफल के रूप में महामहिम जी को प्रेषित किया एवं जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के बारे में जानकारी प्रदान की। जम्बूद्वीप रचना के विषय में सम्पूर्ण जानकारी से संयुक्त जम्बूद्वीप दर्शन पुस्तिका प्रदान की एवं ज्ञानमती माताजी वर्तमान में शाश्वत तीर्थ अयोध्या में विराजमान हैं, जिनके सान्निध्य में महामहोत्सव सम्पन्न होने जा रहा है, जो कि 30 अप्रैल से 7 मई तक वृहद् उत्सव-महोत्सव के साथ सम्पन्न किया जा रहा है, जिसमें देश के विभिन्न अंचलों से यात्रीगण पधार रहे हैं। प्रतिनिधिमण्डल में जम्बूद्वीप संस्थान के मंत्री विजय कुमार जैन, आदीश जैन सर्राफ लखनऊ, शुभचंद्र जैन-लखनऊ, वीर कुमार जैन, अशोक दोशी-मुम्बई, श्रीमती स्मृति जैन, श्रीमती सुनयना जैन आदि सम्मिलित हुए। माननीय महामहिम जी ने जम्बूद्वीप रचना का चित्र देखकर कहा कि पूर्व में मैंने जम्बूद्वीप रचना का दर्शन किया हुआ है। मैं वहां पर गई हूं एवं वहां पर मुझे थोड़ी देर रुकने का अवसर प्राप्त हुआ एवं आध्यात्मिक ऊर्जा से युक्त क्षेत्र जो सम्पूर्ण समाज के लिए विश्वशांति का संदेश प्रदान करती है।

जैन मिलन चन्देरी के एडवोकेट अर्पित जैन बने अध्यक्ष

चन्देरी. शाबाश इंडिया। स्थानीय महावीर धर्मशाला में शुक्रवार को जैन मिलन शाखा की विशेष निर्वाचन सभा का आयोजन किया जिसमे राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय पदाधिकारियों ने सहभागिता की। सभा के प्रारम्भ में दीप प्रज्जवलन, महावीर प्रार्थना, अतिथि स्वागत के पश्चात सत्र 2023-24 के लिए निर्वाचन प्रक्रिया में सर्वसम्मति से एडवोकेट अर्पित जैन को अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया वहीं अनिल जैन शिक्षक को पुनः मंत्री बनाया गया ।तत्काल पूर्व अध्यक्ष राजेश जैन सल्लू ने लेपिल लगाकर नवींन अध्यक्ष को कार्यभार सौंपा ।सभा मे अतिथियों ने शाखा संचालन के लिए दिशा निर्देश देते हुए सक्रियता से मिलन आंदोलन की प्रगति के लिए कार्य करने का आव्हान किया। सभा मे मुख्य रूप से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुभाष जैन कैंची बीड़ी क्षेत्रीय अध्यक्ष वीर नरेश जैन, क्षेत्रीय उपाध्यक्ष विनोद जैन भारिल्ल एवं सुनील जैन धन्नु, रिंकु भारत अशोकनगर के साथ स्थानीय शाखा से जयेंद्र जैन'निप्पू', राजकुमार कठरया, अतुल जैन पत्रकार, नीरज जैन वर्धमान ,अमित जैन संभव हाथीशाह, राजकुमार जैन सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे।

प्रसिद्ध लेखिका

पूजा गुप्ता

निवासी मिजार्पुर, उत्तर प्रदेश

को जन्मदिन की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

शुभेच्छु: दुर्गेश नंदिनी नामदेव, रीमा सिन्हा, संतोषी नामदेव, शोभा श्रीवास्तव, मीना भास्कर, रुक्मणी गुप्ता

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

अंतरराष्ट्रीय नृत्य दिवस

नृत्यम-2023 में रंगारंग नृत्य प्रस्तुतियों ने जमाया रंग

भारतीय लोक कला मंडल के मुक्ताकाशी मंच पर हुआ कार्यक्रम

उदयपुर. शाबाश इंडिया

अंतर राष्ट्रीय नृत्य दिवस के खास मौके पर और आजादी के अमृत महोत्सव के तहत शनिवार की शाम भारतीय लोक कला मंडल के मुक्ताकाशी मंच पर आयोजित नृत्यम - 2023 में शहर की प्रतिभाओं के दमदार और मोहक प्रस्तुतियों ने सभागार में उपस्थित दर्शकों का मन मोह लिया। कला मण्डल के निदेशक डॉ. लईक हुसैन ने बताया कि वर्ष 1982 में नृत्य को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अंतर राष्ट्रीय रंगमंच संस्थान द्वारा स्थापित विश्व नृत्य दिवस के 41वे वर्ष के उपलक्ष्य में सजी इस अनूठी संध्या में लेकसिटी की कई उभरती नृत्य प्रतिभाओं संग नृत्य गुरुओं के प्रदर्शन ने हर किसी को खासा प्रभावित किया। उन्होंने बताया कि इस आयोजन के पीछे मुख्य उद्धेश्य शहर की विभिन्न शैली में नृत्य सीख रही युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना उन्हें रंगमंच पर प्रस्तुति का अवसर देना था। जिसे सभी प्रतिभागियों ने मंच पर सार्थक किया। इस अवसर पर संस्था के मानद सचिव सत्य प्रकाश गौड़, अपर जिला एवं सैशन न्यायधीश कुलदीप शर्मा, गाँधी दर्शन समिति के संयोजक पंकज शर्मा, तारीक खान सहित अन्य गणमान्य अतिथियों ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की। कार्यक्रम की शुरूआत कथक नृत्य गुरू रेणु गरेरे के शिष्यों ने गुरू एवं गणेश वंदना की प्रस्तुति संग की। उसके बाद पूजा नाथावत ने भरत नाट्यम, गीतांजलि इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजिकल स्टडीज के छात्रों द्वारा राजस्थानी लोक नृत्य, ओडिसी नृत्य की गुरू शैली श्रीवास्तव के शिष्यों द्वारा स्तुति, स्थाई एवं वंदेमातरम, कथक नृत्य गुरू डॉ. सरोज शर्मा के शिष्यों ने इन्द्र धनुष, ओडिसी नृत्य गुरू कृष्णनेन्दू साहा के शिष्यों ने पल्लवी एवं मंगला चरण, कथक नृत्य गुरू शिप्रा चटर्जी के शिष्यों ने सम सामयिक कथक शैली में महिला सशक्तिकरण की प्रस्तुतियाँ देकर डेढ़ घंटे से अधिक समय तक दर्शकों को बांधे रखा। कार्यक्रम के अंत में सेवानिवृत्त आईएएस विनीता बोहरा सहित अन्य सभी गणमान्य अतिथियों ने तमाम नृत्य गुरूओं को स्मृति चिह्न और शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

रिपोर्ट/ फोटो
राकेश शर्मा 'राजदीप'
मोबाइल : 9829050939

जेएसजी वीनस की ग्रुप कार्यकारिणी की मीटिंग संपन्न

जयपुर. शाबाश इंडिया

जेएसजी वीनस की ग्रुप कार्यकारिणी मय दम्पत्ति सदस्य सहित एक मीटिंग ग्रुप के पूर्व अध्यक्ष रविन्द्र रचना जी बिलाला जी के निवास स्थान पर की गई जिसमे ग्रुप के समस्त कार्यकारणी सदस्यों की सहभागिता रही सर्व प्रथम ग्रुप के संस्थापक अध्यक्ष शैलेंद्र शाह के द्वारा सभी स्वागत उदभोदन दि या आज वीनस ग्रुप की स्थापना हुए 16 वर्ष पूर्ण करके 17 वे वर्ष में प्रवेश करने जा रहे है। साथ में ग्रुप अध्यक्ष नितिन निशा बेनेठा सचिव मनीष चीनू लुहाड़िया को आगामी सत्र 2023-2025 के लिए पदभार संभालवाया। ग्रुप अध्यक्ष श्री नितिन जैन सामाजिक धार्मिक कार्यक्रम व साथ में मनोरंजन, खेल कूद के अच्छे कार्यक्रम करने के लिए और ग्रुप मे नए सदस्य जोड़ने के लिए प्रयास करने के लिए सभी कार्यकरणी सदस्यो को कहा। ग्रुप अध्यक्ष नितिन निशा ने अपने उद्बोधन में ग्रुप के आगामी कार्यक्रम कार्यकारणी के समक्ष रखे। जिसमे धार्मिक यात्रा- विदेश यात्रा व ग्रुप द्वारा किसी भी रिजॉर्ट में रात्रि विश्राम का कार्यक्रम करने की बात कही उसके बाद ग्रुप के पूर्व अध्यक्ष नवीन सीमा गंगवाल व अक्षय रीना मोदी के द्वारा ग्रुप के पूर्व अध्यक्ष महेन्द्र-मीनू गिरधरवाल को JSGIF में सचिव बनने पर माला पहनाकर बधाई दी व साथ मे JSGIF नॉर्दन रीजन मे वाइस चेयरमैन बनने पर रविन्द्र-रचना बिलाला का भी माला पहनाकर स्वागत किया गया। ग्रुप के सभी कार्यकरिणी सदस्यो ने ग्रुप संस्थापक अध्यक्ष को विश्वास दिलाया कि हम एकजुट होकर प्रयास करेंगे।

मंदिर के शिखर पर जो मंगल कलश की स्थापना करता है उसके जीवन में कभी अमंगल नहीं होता : गुरु मां विज्ञा श्री माता जी

पारस जैन पार्श्वमणि. शाबाश इंडिया

कोटा। श्री 1008 वासुपूज्यश्री 1008 वासुपूज्य दिगम्बर जैन मंदिर, कृष्णा नगर, रंगबाड़ी, कोटा में पूज्य गणाचार्य गुरुदेव 108 श्री विराग सागरजी महाराज की सुविज्ञ शिष्या प. पू. भारत गौरव गणिनी आर्यिका 105 विज्ञाश्री माताजी के ससंघ पावन सान्निध्य में कलशारोहण स्थापना महोत्सव की शुरूआत ध्वजारोहण के साथ हुई। ध्वजारोहण ध्वजारोहणकर्त्ता परिवार अशोक पाटनी इन्द्रा विहार कोटा के हाथों से हुई। एवं गुरूमाँ के मंगल आशीर्वाद से ध्वजा पूर्व दिशा में फहरायी। दोपहर में यागमण्डल विधान का आयोजन सुमधुर संगीत की धुनों के साथ सानंद सम्पन्न हुआ। इंद्र-इंद्राणियो ने खूब भक्ति नृत्य किए। पूज्य गुरुमां ने प्रवचन में श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि- मंदिर के शिखर पर जो मंगल कलश की स्थापना करता है उसके जीवन में कभी अमंगल नहीं होता। अर्थात उसका जीवन मंगलमय बन जाता है। सत्कार्य करने से सदगति की प्राप्ति होती है एवं सदगति की प्राप्ति से मनुष्य अनंत सुखों का उपभोक्ता होता है।